गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक, ''अन्धविश्वास सत्य और तथ्य'' का सार–संक्षेप

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की–247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555

सोते समय सिर किधर हो

सोते समय व्यक्ति का सिर पूर्व दिशा की ओर रहना चाहिए। दक्षिण दिशा की ओर पैर करके कदापि नहीं सोना चाहिए, यह तथ्य एक साधारण आर बिना पढ़ा–लिखा व्यक्ति भी सम्भवतः जानता हो।

इस विषय को समझने के लिए पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति को समझना आवश्यक है। इस शक्ति का ज्ञान हमारे ऋषि–मुनियों को सदियों पूर्व ही हो गया था। वैज्ञानिक अनुमान लगा रहे हैं कि सम्भवतः पृथ्वी का तरल लोह क्रोड ही इसके लिए उत्तरदायी है जो तरल डायनुमों की भाँति कार्य करता है। प्रत्यक्ष में पृथ्वी का चुम्बकीय क्षेत्र उस क्षेत्र के समकक्ष है जो एक विशाल दण्ड चुम्बक को धरती के मध्य में, पृथ्वी की धुरी के तल से लगभग 10 डिग्री का कोण बनाते हुए रख देने से पैदा हो सकता है। इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि धरती के मध्य में एक विशाल दण्ड चुम्बक रखा हुआ है जिसके परिणामस्वरूप यह चुम्बकीय क्षेत्र बनाता है। साधारण दण्ड चुम्बक भी भाँति धरती की दिशा में चुम्बकीय उत्तर

और दक्षिण ध्रुव बने हुए हैं। पृथ्वी की चुम्बकीय बल रेखाएं उत्तरी गोलार्ध में केन्द्र की ओर, और दक्षिण गोलार्ध में केन्द्र से परे होती हैं। हमारे सौर जगत ध्रुव के आकर्षण पर ह। यह ध्रुव उत्तरी दिशा में स्थित हैं। यदि कोई व्यक्ति उत्तर की ओर मुँह करके सोएगा तो चुम्बकीय बल रेखाएं ध्रुवाकर्षण के कारण पेट में पड़े भोजन का ऊपर की ओर गतिशील रखेंगी। इससे हृदय तथा अन्य पाचन अंगो पर उल्टा प्रभाव पड़ने लगेगा। इससे मस्तिष्क की ओर बहने वाला रक्त प्रवाह भी प्रभावित होगा। फलस्वरूप इसके विपरीत उत्तर की ओर यदि पैर करके सोया जाएगा तो यह प्रवाह दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर होगा अर्थात् हमारे मस्तिष्क से पैरों की और जो अधिक लाभदायक स्थिति सिद्ध होगी। इस प्रकार सोने से भोजन भी पचने में सहायक सिद्ध होगा।

हमारी संस्कृति में मृत्यु के बाद शरीर को उत्तर दिशा की ओर सिर करके लिटाया जाता है। शरीर से प्राण निकलने की दिशा उर्ध्वमुखी होनी चाहिए। उत्तर दिशा की ओर सिर होने से उत्तर दिशा की ओर ही निरन्तर बहने वाला चुम्बकीय प्रभाव प्राण को अधोमुखी नहीं होने देता।

चुम्बकीय प्रभाव का एक अन्य उदाहरण हमारे मृत्यु समय के एक अन्य कर्म में भी स्पष्ट दिखाई देता है। मृत्यु से पूर्व व्यक्ति को सीधे धरती पर लिटा दिया जाता है। इस प्रकार रीढ़ की हड्डी सीधी तन जाती है और मृत्यु समय की श्वास अवरोधक गति कुछ सीमा तक मृत्यु तुल्य व्यक्ति को थोड़ी सी राहत पहुँचाती है। पृथ्वी का

चुम्बकीय प्रवाह भी श्वास में राहत देता है और प्राण को सिर से निकलने में सहायता पहुँचाता है।

यहाँ यह भी स्पष्ट कर दें कि सीधा चित्त लिटाने के पीछे वर विज्ञान का आधार है। व्यक्ति में दाएं तथा बाएं नाक के छिद्रों से श्वास–निश्वास की क्रिया होती रहती है। इन्हें क्रमशः सूर्य अर्थात् गरम और चन्द्र अर्थात् ठण्डा स्वर भी कहते हैं। यदि मृत्यु तुल्य व्यक्ति को बाएं करवट लिटाया जाएगा तो स्वर विज्ञान के सिद्धान्त से उसका दायाँ स्वर चलने लगेगा फलस्वरूप सूर्य गुण प्रधान होने के कारण इस स्वर से शरीर में उष्णता का संचार होने लगेगा। यह अथवा इसके विपरीत दाएं करवट लेटाने पर चन्द्र अथवा ठण्डे स्वर की गति शरीर में ताप में सामंजस्य बिगाड़ देगी। ऐसी स्थिति में दोनो स्वरों से श्वास–निश्वास क्रिया होने से सामंजस्य बना रहता है, जो तब ही सम्भव है जब व्यक्ति को चित्त अर्थात सीधे लिटाया जाए।

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)
फोन : (01332) 274370
मोः 09760111555
website : www.astrotantra4u.com
E-mail:gopalraju12@yahoo.com